KOLHAN UNIVERSITY, CHAIBASA

History PG Semester 3
Paper – cc7

द्वितीय विश्वयुद्ध की उत्पत्ति के कारण

प्रथम विश्वयुद्ध १९१४ ईश्वी में शुरू हुआ और १९१८ ईश्वी तक चला था |इस यूद्ध में धन-जन की भारी क्षति हुई थी|इस यूद्ध में मित्र राष्ट्र विजय हुआ था |यूद्ध की समाप्ति के बाद सभी देश शांति की मांग करने लगे थे |सभी देशो ने शांति स्थापित करने और भविष्य में यूद्ध की संभावना को रोकने के लिए वैश्विक स्तर पर एक संस्था बनाने की मांग की |इसके बाद राष्ट्र संघ की स्थापना हुई |परन्तु इससे पहले की राष्ट्र संघ अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर पाता साम्राज्यवादी राष्ट्रों के स्वार्थ ने विश्व को दुबारा यूद्ध की स्तिथि में लेकर खड़ा कर दिया|विश्व १९३९ ईश्वी में दुबारा यूद्ध की आग में जलने लगा और १९४५ ईश्वी तक जलता रहा|

द्वितीय विश्व युद्ध की उत्पत्ति के कारण :-

१. पेरिस की शांति सम्मलेन : यूद्ध समाप्ति के बाद फ्रांस की राजधानी पेरिस में एक शांति परिषद् की स्थापना की गई |इस यूद्ध में चूँकि धुरी राष्ट्रों की हार हुई थी और हार है सारा जिम्मा जर्मनी पर डालते हुए मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी के साथ वर्साय की संधि की |यह संधि बदले की भावना से भरी हुई थी |जिसमे जर्मनी के साथ बहुत बुरा सुलूक किया गया था |यहाँ तक की संधि में उसे अपनी बात कहने का मौका तक नहीं दिया गया था |उसके साम्राज्य को मित्र राष्ट्रों ने बाँट लिया |उसकी सैनिक शक्ति सिमित कर दी गई |उसके जंगी जहाजों पर मित्र राष्ट्रों का अधिकार हो गया |अल्सेस और लॉरेन प्रदेश उससे छीन लिए गे जहा उसने वस्त्र और लोहे के विशाल उद्योग लगे थे ||जर्मन लोगो को अन्य राष्ट्रों द्वारा अनुशाषित होना पड़ा ||जर्मनी का विभाजन कर दिया गया|उस पर क्षतिपूर्ति की भरी रकम लादी गई |इस प्रकार इस परिषद् में जर्मनी को हर प्रकार से अपमानित किया गया था यही अपमान जर्मनी को यद्ध और प्रतिशोध के लिए उकसाता रहा जिसका परिणाम द्वितीय विश्व युद्ध के रूप में सामने आया |

२. मानचित्र में परिवर्तन: प्रथम विश्व यूद्ध के बाद मित्र राष्ट्रों ने यूरोप के मानचित्र पर जो परिवर्तन किया था उससे राष्ट्रवाद का विरोध हुआ था |विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोग जिनकी सभ्यता ,संस्कृति रहन सहन ,रीती रिवाज ,वेश भूषा और खान पान में असमानताएं थी उनकी इच्छा के विरुद्ध उन्हें ऐसे राष्ट्रों के अधीन कर दिया गया जिनकी की वो विरोध में थे |अधिकांशतः जर्मन जातियों को ऐसे राष्ट्रों के अधीन किया गया जो उनके विकास में बाधक बने|वे जातियां वह सुख से न रह सकी|अतः उन जातियों का विरोध संभावित था |

Sensitivity: Internal & Restricted

३. सार का प्रदेश : जर्मनी १८७१ ईश्वी में फ्रांस के साथ एक अपमानजनक संधि की थी और प्रान्स के दो प्रदेशो

आलसेस और लॉरेन जो फ्रांस के लिए औद्योगिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण थे को फ्रांस से छीन लिए थे |फ्रांस के ये दोनों प्रदेश लोहे और कोयले के खानो से भरे पड़े थे |जर्मनी ने इन प्रदेशों पर अपने उद्योग लगे थे और वो आर्थिक रूप से इन प्रदेशों से लाभान्वित हो रहा था |परन्तु वर्साय की संधि में जर्मनी से ये दोनों प्रदेश छीन कर अगले १५ वर्षो के लिए राष्ट्र संघ के अधीन कर दिया गया था |इस निर्णय से जर्मनी को आर्थिक दृष्टि से गहरा धक्का लगा था जिससे जर्मनी में भरी असंतोष व्याप्त हो गया था |

४. साम्राज्यवाद की पिपासा : प्रथम विश्व योद्ध का एक महत्वपूर्ण कारण साम्राज्यवाद था और द्वितीय विश्व यूद्ध

का कारण भी साम्राज्यवाद ही था ||अपनी बढ़ी हुई आबादी को बसने के लिए और कृषि योग्य भूमि प्राप्त करने के लिए जर्मनी, इटली और जापान जैसे राष्ट्र साम्राज्यवाद की दौड़ में सबसे आगे थे इनका अनुसरण करते हुए बाद में मित्र राष्ट्र भी इस दौड़ में शामिल हो गए|यहाँ विरोध की स्तिथि बननी ही थी जो बाद में यूद्ध का रूप लेती गई |

५ . नवीन शक्तियों का उदय : इस समय यूरोप के रंग मंच पर कुछ नवीन शक्तियों का उदय हो रहा था |जर्मनी

में हिटलर और इटली में मुसोलिनी जैसे शक्तिशाली नेताओं का उदय होना विश्व के लिए एक खतरा था |हिटलर ने जर्मनी में नाजी पार्टी बनाई और इस पार्टी के माध्यम से वो वहां तानाशाह के रूप में शासन करने लगा उसकी शक्तियां दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही थी |उसका जर्मनी का सैन्यीकरण करना वर्साय की संधि की शर्तो का लगातार उल्लंघन करना आदि ने विश्व के सभी देशो को चिंता में डाल रखा था |अतः हिटलर को रोकने तथा उसका मुकाबला करने के उद्देश्य से विश्व के अन्य देश भी सैन्यीकरण की दौड़ में शामिल हो गए |

६. उद्योगों की अव्यवस्था : यूरोप की आर्थिक दशा सोचनीय थी |उद्योगों का विकास रुक सा गया था |आर्थिक

संकट के कारण बहुत सरे उद्योग बंद हो गए थे |सभी देशो ने आर्थिक संरक्षण की नीति अपना ली थी |आर्थिक संरक्षण की नीति के तहत हर देश अब अपने ही देश की चीजों को ही प्राथमिकता दे रहा था |दूसरे देश की चीजों को अपने बाज़ारो में बेचने की इजाजत नहीं दे रहा था |इधर हिटलर ने भी वर्साय की संधि का उल्लंघन करते हुए हर्जाने की रकम देना भी बंद कर दिया था |इससे भी विश्व के अनेक देशो पर बुरा प्रभाव पड़ रहा था |इससे यूरोप में एक नयी आग सुलगने लगी |उद्योगों की दशा में सुधार लेन के लिए अब यूद्ध आवश्यक हो गया था |

Sensitivity: Internal & Restricted

७. शस्त्रीकरण का प्रकोप : शस्त्रीकरण की शर्त राष्ट्र संघ द्वारा तय की गई थी जिसका उल्लंघन सबसे पहले हिटलर ने किया था |उसने अपनी नाविक शक्ति का विकास शुरू कर दिया |अपने यहाँ सैनिक शिक्षा हर नागरिक के लिए अनिवार्य कर दी |खुद को राष्ट्र संघ की सदस्यता से भी अलग कर लिया |अपनी इस निति के तहत उसने ऑस्ट्रिया और चेकोस्लाविया पर अधिकार कर लिया |उसका अनुसरण केते हुए इटली और जापान ने भी यही नीति अपनाई|फलस्वरूप यूद्ध अवश्यम्भावी हो गया |

८. नव जागरण का यूद्ध : यह युग नवजागरण का युग था |रूस में बोल्शेविक, जर्मनी में नाजीवाद और इटली में फासीवाद जैसी नवीन विचार तेजी से अपने पैर फैला रहे थे तानाशाही और साम्यवाद के प्रभाव को विश्व का हर राष्ट्र एक खतरा समझता था और इसे रोकना चाहता था |ऐसे में युद्ध तो होना ही था |

९. विचारधाराओं का संघर्ष : यह युग दो विचारधाराओं के बीच का युग था |एक तरफ जर्मनी इटली और जापान थे जो तानाशाही के समर्थक थे तो दूसरी और फ्रांस, इंग्लैंड ,अमेरिका थे जो प्रजातंत्र के समर्थक थे |इन दोनों विचारधराओं के बीच कभी समझौता तो हो नहीं सकता था अतः युद्ध ही एकमात्र रास्ता था |

१०. यूरोप का दो विरोधी युद्ध शिविरों में विभाजन : जर्मनी और अन्य राष्ट्रों की बढ़ती शक्ति को देख कर हर राष्ट्र चिंतित था |अब हर राष्ट्र यह महसूस करने लगा था के एकाकी रह कर अपनी सुरक्षा नई की जा सकती अतः हर राष्ट्र अब किसी दूसरे की साथ संधि कर लेना चाहता था ताकि युद्ध या आक्रमण के समय उसे साहयता का आश्वासन रहे |इस क्रम में सबसे पहले फ्रांस, रूस ,चेकोस्लाविया ,रूमानिया और युगोस्लाविया ने अपना गुट बनाया |उसके विरोध में जर्मनी ,जापान और इटली में गुटबंदी हुई |एक गुट का नेता फ्रांस था दूसरे गुट का नेता जर्मनी था |एक गुट तानाशाह को समर्थन दे रहा था दूसरा गुट प्रजातंत्र को |इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व इन दोनों गुटों में बंट चूका था |

११. संधियों की निर्मूलता : पेरिस की शांति परिषद् की संधियों का अगर हर राष्ट्र पालन करता तो युद्ध को रोका जा सकता था ,परन्तु इस सम्मलेन की संधियों का किसी भी राष्ट्र के लिए कोई मोल नई रहा |सर्वप्रथम जर्मनी ने इसकी अवहेलना करते हुए अपनी सेना में बृद्धि की |सैनिक शिक्षा अनिवार्य की |क्षतिपूर्ति की रकम देने से मना कर दिया |इस संधि को निर्मूल करते हुए उसने चेकोसलावीया और आस्ट्रिया पर आक्रमण किया |उसके बाद अन्य राष्ट्रों ने भी संधि की अवहेलना शुरू कर दी और इस तरह यह संधि निर्मूल रह गई |

Sensitivity: Internal & Restricted

१२. राष्ट्र संघ की शक्तिहीनता : राष्ट्र संघ के उद्देश्य महान थे |यदि शक्ति से उनका पालन किया जाता तो युद्ध रोका जा सकता था|राष्ट्र संघ की सबसे बड़ी उसके पास कोई स्थाई सेना का न होना था |जिसके अभाव में किसी भी राष्ट्र पर नियंत्रण नई रख सका||जब भी जर्मनी ने जब भी संधि की अवहेलना की मित्र राष्ट्रों ने उसकी शिकायत की| राष्ट्र संघ ने उसे रोकने की कोशिश की पर जर्मनी हर बार राष्ट्र संघ को अनदेखा करता हुआ मनमानी करता रहा और राष्ट्र संभ कुछ भी न कर सका|राष्ट्र संघ की यह कमजोरी भी युद्ध के लिए जिम्मेदार थी |

१३. युद्ध की भयंकर तैयारियां : हिटलर की बढ़ती शक्ति को देख कर हर राष्ट्र युद्ध की भयंकर तैयारियों में लग गया था |१९३५ ईश्वी तक जर्मनी १५०० जहाज बनाने लगा था |इधर फ्रांस ने किलों की कतार" मागिनो लाइन "बिछा ली थी जो ज़मीन की सतह से १९० फुट से १५० फुट तक निचे थी |उसकी प्रतिउत्तर में जर्मनी ने किलों की कतार" सीग्फ्रीड लाइन " बिछा ली |ब्रिटेन ,बेल्जियमऔर ब्रिटेन ने भी इसी प्रकार की किलेबंदी शुरू कर दी थी |

१४. तात्कालिक कारण : पेरिस शांति सम्मलेन में पोलैंड को तटस्थ राज्य घोषित किया गया था जिस पर कोई भी राष्ट्र अधिकार नहीं कर सकता था |पोलैंड को समुद्र तट तक जाने के लिए जर्मनी से हो कर मार्ग दिया गया था |इस बात का बहाना बनाकर जर्मनी पोलैंड पर अपना अधिकार समझता था |पोलैंड को जर्मनी विरोधी राष्ट्रों की सहायता का भरोसा था |लेकिन जब जर्मनी ने चेकोस्लाविया और ऑस्ट्रिया पर अधिकार किया तब फ्रांस और इंग्लैंड चुपचाप देखते रहे |यदि उस वक़्त जर्मनी का इन दोनों ने विरोध किया होता तो जर्मनी को वही रोका जा सकता था |पर उस समय वे मूकदर्शक बने रहे |इसी बात का फायदा उठाते हुए जर्मनी ने १ सितम्बर १९३९ को पोलैंड पर आक्रमण कर लिया तब तब जर्मनी विरोधी शिविर पोलैंड की सहायता के लिए आ गया और युद्ध शुरू हो गया |

इस प्रकार देखते ही देखते सम्पूर्ण विश्व युद्ध की आग में झुलसने लगा |एक तरफ इंग्लैंड ,फ्रांस ,रूस,जापान ,अमेरिका थे और दूसरी तरफ जर्मनी ,ऑस्ट्रिया ,हंगरी ,बुल्गारिया ,तुर्की शामिल थे |इस युद्ध में करीब ७० देश शामिल थे |और करीब १० करोड़ सैनिकों ने भाग लिया थे |यह युद्ध १ सितम्बर १९३९ को शुरू हुआ और २ सितम्बर १९४५ तक ५ वर्षो तक चलता रहा और जर्मनी के आत्मसमर्पण के साथ यह युद्ध समाप्त हुआ |

By:- Shaheena Parween
Lecturer, JLN College,

Sensitivity: Internal & Restricted

Chakradharpur,
Dept. of History

Sensitivity: Internal & Restricted